اٰیاتها ۲۸ | ۷۱ سُوْرَةُ نُوْحٍ مَّكِّيَّةٌ ۷۱ | رکوعاتها ۲

सूरए नूह़ मक्किय्या है, इस में अठाईस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहूम वाला[1]

اِنَّاۤ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖۤ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَهُمْ

बेशक हम ने नूह़ को उस की क़ौम की त़रफ़ भेजा कि उन को डरा इस से पहले कि उन पर

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝۱ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝۲ۙ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ

दर्दनाक अ़ज़ाब आए[2] उस ने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम मैं तुम्हारे लिये सरीह़ डर सुनाने वाला हूं कि अल्लाह की बन्दगी करो[3]

وَاتَّقُوْهُ وَاَطِيْعُوْنِ ۝۳ۙ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ اِلٰۤى اَجَلٍ

और उस से डरो[4] और मेरा हुक्म मानो वोह तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श देगा[5] और एक मुक़र्रर मीआ़द तक[6] तुम्हें

مُّسَمًّى ؕ اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ اِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝۴ قَالَ وقف لازم

मोहलत देगा[7] बेशक अल्लाह का वा'दा जब आता है हटाया नहीं जाता किसी त़रह़ तुम जानते[8] अ़र्ज़ की[9]

رَبِّ اِنِّيْ دَعَوْتُ قَوْمِيْ لَيْلًا وَّنَهَارًا ۝۵ۙ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِيْۤ اِلَّا

ऐ मेरे रब मैं ने अपनी क़ौम को रात दिन बुलाया[10] तो मेरे बुलाने से उन्हें भागना

فِرَارًا ۝۶ وَاِنِّيْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْۤا اَصَابِعَهُمْ فِيْۤ اٰذَانِهِمْ

ही बढ़ा[11] और मैं ने जितनी बार उन्हें बुलाया[12] कि तू उन को बख़्शे उन्हों ने अपने कानों में उंगलियां दे लीं[13]

وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَاَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝۷ۚ ثُمَّ اِنِّيْ دَعَوْتُهُمْ

और अपने कपड़े ओढ़ लिये[14] और हट (ज़िद) की[15] और बड़ा ग़ुरूर किया[16] फिर मैं ने उन्हें

1 : सूरए नूह़ मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, अठाईस 28 आयतें, दो सो चौबीस 224 कलिमे, नव सो निनानवे 999 ह़र्फ़ हैं। 2 : दुन्या व आख़िरत का 3 : और उस का किसी को शरीक न बनाओ 4 : ना फ़रमानियों से बच कर ताकि वोह ग़ज़ब न फ़रमाए 5 : जो तुम से वक़्ते ईमान तक सादिर हुए होंगे या जो बन्दों के ह़ुक़ूक़ से मुतअ़ल्लिक़ न होंगे 6 : या'नी वक़्ते मौत तक 7 : कि इस दौरान में तुम पर अ़ज़ाब न फ़रमाएगा। 8 : उस को और ईमान ले आते। 9 : ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने 10 : ईमान व त़ाअ़त की त़रफ़ 11 : और जितनी उन्हें ईमान लाने की तरग़ीब दी गई उतनी ही उन की सरकशी बढ़ती गई 12 : तुझ पर ईमान लाने की त़रफ़ 13 : ताकि मेरी दा'वत को न सुनें 14 : और मुंह छुपा लिये ताकि मुझे न देखें क्यूं कि उन्हें दीने इलाही की त़रफ़ नसीह़त करने वाले को देखना भी गवारा न था। 15 : अपने कुफ़्र पर 16 : और मेरी दा'वत को क़बूल करना अपनी शान के ख़िलाफ़ जाना।

www.dawateislami.net

جِهَارًا ﴿۸﴾ ثُمَّ اِنِّیْۤ اَعْلَنْتُ لَهُمْ وَ اَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًا ﴿۹﴾ فَقُلْتُ

अ़लानिया बुलाया[17] फिर मैं ने उन से ब ए'लान भी कहा[18] और आहिस्ता ख़ुफ़्या भी कहा[19] तो मैं ने कहा

اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ﴿۱۰﴾ یُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَیْكُمْ

अपने रब से मुआ़फ़ी मांगो[20] बेशक वोह बड़ा मुआ़फ़ फ़रमाने वाला है[21] तुम पर शर्राटे का मींह

مِّدْرَارًا ﴿۱۱﴾ وَّ یُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّ بَنِیْنَ وَ یَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّ

(मूस्लाधार बारिश) भेजेगा और माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा[22] और तुम्हारे लिये बाग़ बना देगा और

یَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ﴿۱۲﴾ مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ﴿۱۳﴾ وَ قَدْ خَلَقَكُمْ

तुम्हारे लिये नहरें बनाएगा[23] तुम्हें क्या हुवा अल्लाह से इ़ज़्ज़त ह़ासिल करने की उम्मीद नहीं करते[24] ह़ालां कि उस ने तुम्हें त़रह़

اَطْوَارًا ﴿۱۴﴾ اَلَمْ تَرَوْا كَیْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ﴿۱۵﴾ وَّ جَعَلَ

त़रह़ बनाया[25] क्या तुम नहीं देखते अल्लाह ने क्यूंकर सात आस्मान बनाए एक पर एक और उन में

الْقَمَرَ فِیْهِنَّ نُوْرًا وَّ جَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿۱۶﴾ وَ اللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ

चांद को रोशनी किया[26] और सूरज को चराग़[27] और अल्लाह ने तुम्हें सब्ज़े की त़रह़

الْاَرْضِ نَبَاتًا ﴿۱۷﴾ ثُمَّ یُعِیْدُكُمْ فِیْهَا وَ یُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ﴿۱۸﴾ وَ اللّٰهُ

ज़मीन से उगाया[28] फिर तुम्हें उसी में ले जाएगा[29] और दोबारा निकालेगा[30] और अल्लाह

17 : बबांगे बुलन्द मह़फ़िलों में **18 :** और दा'वत बिल ए'लान की तक्रार भी की **19 :** एक एक से और कोई दक़ीक़ा दा'वत का उठा न रखा। क़ौम ज़मानए दराज़ तक ह़ज़रते नूह عَلَیْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब ही करती रही तो अल्लाह तआ़ला ने उन से बारिश रोक दी और उन की औ़रतों को बांझ कर दिया, चालीस साल तक उन के माल हलाक हो गए, जानवर मर गए, जब येह ह़ाल हुवा तो ह़ज़रते नूह عَلَیْهِ السَّلَام ने उन्हें इस्तिग़फ़ार का हुक्म दिया। **20 :** कुफ़्रो शिर्क से और ईमान ला कर मग़्फ़िरत त़लब करो ताकि अल्लाह तआ़ला तुम पर अपनी रह़मतों के दरवाज़े खोले क्यूं कि त़ाआ़त में मश्ग़ूल होना ख़ैरो बरकत और वुस्अ़ते रिज़्क़ का सबब होता है। **21 :** तौबा करने वालों को, अगर तुम ईमान लाए और तुम ने तौबा की तो वोह **22 :** माल व औलाद ब कसरत अ़त़ा फ़रमाएगा **23 :** ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि एक शख़्स आप के पास आया और उस ने क़िल्लते बारिश की शिकायत की, आप ने इस्तिग़फ़ार का हुक्म दिया। दूसरा आया उस ने तंगदस्ती की शिकायत की, उसे भी येही हुक्म फ़रमाया। फिर तीसरा आया उस ने क़िल्लते नस्ल की शिकायत की, उस से भी येही फ़रमाया। फिर चौथा आया उस ने अपनी ज़मीन की क़िल्लते पैदावार की शिकायत की, उस से भी येही फ़रमाया, रबीअ़ बिन सबीह़ जो ह़ाज़िर थे उन्हों ने अ़र्ज़ किया : चन्द लोग आए क़िस्म क़िस्म की ह़ाजतें उन्हों ने पेश कीं आप ने सब को एक ही जवाब दिया कि इस्तिग़फ़ार करो तो आप ने येह आयत पढ़ी (इन ह़वाइज के लिये येह क़ुरआनी अ़मल है)। **24 :** इस त़रह़ की उस पर ईमान लाओ **25 :** कभी नुत़्फ़ा, कभी अ़लक़ा, कभी मुज़्ग़ा, यहां तक कि तुम्हारी ख़िल्क़त कामिल की, उस की आफ़रीनिश में नज़र करना उस की ख़ालिक़िय्यत व क़ुदरत और उस की वह़दानिय्यत पर ईमान लाने को वाजिब करता है। **26 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास व इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से मरवी है कि आफ़्ताब व माहताब के चेहरे तो आस्मानों की त़रफ़ हैं और हर एक की पुश्त ज़मीन की त़रफ़ तो आस्मानों की लत़ाफ़त के बाइ़स इन की रोशनी तमाम आस्मानों में पहुंचती है अगर्चे चांद आस्माने दुन्या में है। **27 :** कि दुन्या को रोशन करता है और उस की रोशनी चांद के नूर से क़वी तर है और आफ़्ताब चौथे आस्मान में है। **28 :** तुम्हारे बाप ह़ज़रते आदम को उस से पैदा कर के **29 :** मौत के बा'द **30 :** उस से, रोज़े क़ियामत।

www.dawateislami.net

جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ﴿۱۹﴾ لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴿۲۰﴾ قَالَ
ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछोना बनाया कि उस के वसीअ़ रास्तों में चलो नूह ने

نُوْحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِیْ وَ اتَّبَعُوْا مَنْ لَّمْ یَزِدْهُ مَالُهٗ وَ وَلَدُهٗۤ اِلَّا
अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब इन्हों ने मेरी ना फ़रमानी की[31] और[32] ऐसे के पीछे हो लिये जिसे उस के माल और औलाद ने नुक़्सान ही

خَسَارًا ﴿۲۱﴾ وَ مَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿۲۲﴾ وَ قَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَ لَا
बढ़ाया[33] और[34] बहुत बड़ा दाउं खेले[35] और बोले[36] हरगिज़ न छोड़ना अपने ख़ुदाओं को[37] और हरगिज़ न

تَذَرُنَّ وَدًّا وَّ لَا سُوَاعًا ۙ۬ وَّ لَا یَغُوْثَ وَ یَعُوْقَ وَ نَسْرًا ﴿۲۳﴾ وَ قَدْ اَضَلُّوْا
छोड़ना वद्द और न सुवाअ़ और यग़ूस और यऊ़क़ और नस्र को[38] और बेशक उन्हों ने बहुतों

كَثِیْرًا ۚ۬ وَ لَا تَزِدِ الظّٰلِمِیْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ﴿۲۴﴾ مِمَّا خَطِیْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا
को बहकाया[39] और तू ज़ालिमों को[40] ज़ियादा न करना मगर गुमराही[41] अपनी कैसी ख़ताओं पर डुबोए गए[42]

فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ۬ فَلَمْ یَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْصَارًا ﴿۲۵﴾ وَ قَالَ
फिर आग में दाख़िल किये गए[43] तो उन्हों ने अल्लाह के मुक़ाबिल अपना कोई मददगार न पाया[44] और नूह़ ने

نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِیْنَ دَیَّارًا ﴿۲۶﴾ اِنَّكَ اِنْ
अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला न छोड़ बेशक अगर

تَذَرْهُمْ یُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَ لَا یَلِدُوْۤا اِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿۲۷﴾ رَبِّ
तू इन्हें रहने देगा[45] तो तेरे बन्दों को गुमराह कर देंगे और इन के औलाद होगी तो वोह भी न होगी मगर बदकार बड़ी नाशुक्र[46] ऐ मेरे रब

31 : और मैं ने जो ईमान व इस्तिग़्फ़ार का हुक्म दिया था उस को इन्हों ने न माना 32 : इन के अ़वाम, ग़ुरबा और छोटे लोग, सरकश रुअसा और अस्हाबे अम्वाल व औलाद के ताबेअ़ हुए 33 : और वोह ग़ुरूरे माल में मस्त हो कर कुफ़्रो तुग़यान में बढ़ता रहा 34 : वोह रुअसा 35 : कि उन्हों ने ह़ज़रते नूह़ عَلَیْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब की और उन्हें और उन के मुत्तबिईन को ईज़ाएं पहुंचाईं 36 : रुअसाए कुफ़्फ़ार अपने अ़वाम से 37 : या'नी उन की इबादत तर्क न करना 38 : येह उन के बुतों के नाम हैं जिन्हें वोह पूजते थे, बुत तो उन के बहुत थे मगर येह पांच उन के नज़्दीक बड़ी अ़ज़मत वाले थे, वद्द तो मर्द की सूरत पर था और सुवाअ़ औ़रत की सूरत पर और यग़ूस शेर की शक्ल और यऊ़क़ घोड़े की और नस्र करगस (गिध) की, येह बुत क़ौमे नूह़ से मुन्तक़िल हो कर अ़रब में पहुंचे और मुश्रिकीन के क़बाइल से एक एक ने एक एक को अपने लिये ख़ास कर लिया। 39 : या'नी येह बुत बहुत से लोगों के लिये गुमराही का सबब हुए या येह मा'ना हैं कि रुअसाए क़ौम ने बुतों की इबादत का हुक्म कर के बहुत से लोगों को गुमराह कर दिया। 40 : जो बुतों को पूजते हैं 41 : येह ह़ज़रते नूह़ عَلَیْهِ السَّلَام की दुआ़ है जब उन्हें वह्य से मा'लूम हुवा कि जो लोग ईमान ला चुके क़ौम में उन के सिवा और लोग ईमान लाने वाले नहीं तब आप ने येह दुआ़ की। 42 : तूफ़ान में 43 : बा'द ग़र्क़ होने के 44 : जो उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से बचा सकता। 45 : और हलाक न फ़रमाएगा 46 : येह ह़ज़रते नूह़ عَلَیْهِ السَّلَام को वह्य से मा'लूम हो चुका था और ह़ज़रते नूह़ عَلَیْهِ السَّلَام ने अपने और अपने वालिदैन और मोमिनीन व मोमिनात के लिये दुआ़ फ़रमाई।

اغْفِرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیَّ وَ لِمَنْ دَخَلَ بَیْتِیَ مُؤْمِنًا وَّ لِلْمُؤْمِنِیْنَ وَ

मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को[47] और उसे जो ईमान के साथ मेरे घर में है और सब मुसलमान मर्दों और

الْمُؤْمِنٰتِؕ وَ لَا تَزِدِ الظّٰلِمِیْنَ اِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾ ع

सब मुसलमान औ़रतों को और काफ़िरों को न बढ़ा मगर तबाही[48]

ع ١٠ النصف

اٰیاتھا ٢٨ | ٧٢ سُوْرَۃُ الْجِنِّ مَكِّیَّةٌ ٤٠ | رکوعاتھا ٢

सूरए जिन्न मक्किय्या है, इस में अठाईस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

قُلْ اُوْحِیَ اِلَیَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْۤا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا

तुम फ़रमाओ[2] मुझे वह़्य हुई कि कुछ जिन्नों ने[3] मेरा पढ़ना कान लगा कर सुना[4] तो बोले[5] हम ने एक अ़जीब

عَجَبًا ﴿١﴾ۙ یَّهْدِیْۤ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖؕ وَ لَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَاۤ اَحَدًا ﴿٢﴾ۙ وَّ

कुरआन सुना[6] कि भलाई की राह बताता है[7] तो हम उस पर ईमान लाए और हम हरगिज़ किसी को अपने रब का शरीक न करेंगे और

اَنَّهُ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّ لَا وَلَدًا ﴿٣﴾ۙ وَّ اَنَّهُ كَانَ یَقُوْلُ

येह कि हमारे रब की शान बहुत बुलन्द है न उस ने औ़रत इख़्तियार की और न बच्चा[8] और येह कि हम में का

سَفِیْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ﴿٤﴾ۙ وَّ اَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَ الْجِنُّ

बे वुक़ूफ़ अल्लाह पर बढ़ कर बात कहता था[9] और येह कि हमें ख़याल था कि हरगिज़ जिन्न और आदमी

عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ﴿٥﴾ۙ وَّ اَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ یَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ

अल्लाह पर झूट न बांधेंगे[10] और येह कि आदमियों में कुछ मर्द जिन्नों के कुछ मर्दों की पनाह

47 : कि वोह दोनों मोमिन थे 48 : अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام की दुआ़ क़बूल फ़रमाई और उन की क़ौम के तमाम कुफ़्फ़ार को अ़ज़ाब से हलाक कर दिया। 1 : सूरए जिन्न मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, अठाईस 28 आयतें, दो सो पचास 250 कलिमे, आठ सो सत्तर 870 ह़र्फ़ हैं। 2 : ऐ मुस्त़फ़ा ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم 3 : नसीबैन के जिन की ता'दाद मुफ़स्सिरीन ने नव 9 बयान की। 4 : नमाज़े फ़ज्र में ब मक़ामे नख़्ला मक्कए मुकर्रमा व त़ाइफ़ के दरमियान 5 : वोह जिन्न अपनी क़ौम में जा कर 6 : जो अपनी फ़साह़तो बलाग़त व ख़ूबिये मज़ामीन व उ़लुव्वे मा'ना में ऐसा नादिर है कि मख़्लूक़ का कोई कलाम उस से कोई निस्बत नहीं रखता और उस की येह शान है 7 : या'नी तौह़ीद व ईमान की। 8 : जैसा कि कुफ़्फ़ारे जिन्नो इन्स कहते हैं। 9 : झूट बोलता था बे अदबी करता था कि उस के लिये शरीक व औलाद और बीबी बताता था। 10 : और उस पर इफ़्तिरा न करेंगे, इस लिये हम उन की बातों की तस्दीक़ करते थे जो कुछ वोह शाने इलाही में कहते थे और ख़ुदावन्दे आ़लम की त़रफ़ बीबी और बच्चे की निस्बत करते थे, यहां तक कि कुरआने करीम की हिदायत से हमें उन का किज़्ब व बोहतान ज़ाहिर हो गया।

www.dawateislami.net